कृष्ण भक्ति काव्यधारा

डॉ. कृष्ण कुमार पासवान
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
राम चरित्र सिंह महाविद्यालय
मंझौल, बेगुसराय
सम्पर्क : ksoni.hindi@gmail.com

भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा में कृष्ण काव्य का विशेष महत्व है। संस्कृत में जयदेव ने 'गीत गोविंद' की रचना करके कृष्ण की सख्य भक्ति का प्रारंभ किया था, जो हिन्दी साहित्य में लगातार चलती रही। कृष्ण भक्ति के प्रचार में वल्लभाचार्य के '*पुष्टि संप्रदाय*' का बहुत बड़ा योगदान माना जाता है। वल्लभाचार्य ने कृष्ण भक्त कवियों को श्रीकृष्ण की लीलाओं का गुणगान करने की प्रेरणा दी। उनके प्रमुख शिष्य सूरदास थे तो इस शाखा के प्रतिनिधि कवि भी है। वल्लभाचार्य के बेटे श्री विट्ठलनाथ ने पुष्टिमार्गी कवियों में से चार कवि अर्थात् सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास और कृष्णदास को तथा अपने चार शिष्यों यथा नंददास, चतर्भुजदास, छीतस्वामी और गोंविंददास को लेकर 'अष्टछाप' की स्थापना की। इन आठ कवियों में सूरदास तथा नंददास अग्रणी है। मीरा इस काव्यधारा की अमर कवयित्री है। 'भागवत पुराण' इस काव्य धारा का आधार ग्रंथ है।

भावगत विशेषताएं

1. लीलावाद में अखंड विश्वास :- कृष्ण काव्य में कृष्ण के लोक रंजक स्वरूप व माधुर्य से पूर्ण लीलाओं का चित्रण है। सभी कवियों ने लीला वर्णन और गायन मुक्त भाव से किया है। लीलाओं का मुख्य उद्देश्य आनंद प्रदान करना है। बाल कृष्ण की वात्सल्य से पूर्ण लीलाएं, बाल गोपियों के साथ सरल रूप स्थापित करती लीलाएं और ब्रज की गोपियों व राधा के साथ रास रचाने वाली माधुर्यमयी लीलाएं संपूर्ण भक्ति काव्य में विद्यमान है। कृष्ण ब्रजवासियों को भय मुक्त करने हेतु पूतना वध, शेषनाग दमन आदि लीलाएं करते हैं। ये लीलाएँ जनमानस के ध्यान को आकृष्ट करने वाली हैं।

2. वात्सल्य का विशद् चित्रण :- कृष्ण के जन्म से उनके मथुरा जाने तक के समय को चित्रित करते हुए कुष्ण भक्त कवियों ने बाल कृष्ण के अनेक वात्सल्य से पूर्ण चित्र प्रस्तुत किये हैं। सूरदास ने 'सूर सागर' में वात्सल्य के अद्भुत चित्र प्रस्तुत किये। उन्होंने वात्सल्य का सजीव व सर्वांगपूर्ण चित्रण किया है। यशोदा व नंद की गहन अनुभूतियों का अति सहज व स्वाभाविक चित्रण किया है -

'शोभित कर नवनीत लिए।

घुटरुनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किये।'

3. प्रेम की विराट कल्पना :- कृष्ण भक्त कवियों ने अन्य धाराओं के भक्त कवियों की तरह प्रतीकात्मक और श्रद्धा से संयमित प्रेम को नहीं अपनाया। इनका संबंध कृष्ण के प्रति जनतांत्रिक किस्म का है जहाँ पहली बार परिचय के माध्यम से प्रेम होता है -

'बूझत स्याम कौन तू गोरी।'

कृष्ण-प्रेम का संयोग वर्णन तो दृष्टव्य है ही किंतु साथ ही वियोग श्रृंगार भी अनुपम हैं। सूरदास के भ्रमर गीत का एक-एक पद इसका साक्षी है -

'निरखत अंक स्याम सुंदर के, बार-बार लावति छाती,

लोचन जल कागद मसि मिलि कै, हवै गई स्याम स्याम की पाती।।'

इनके वियोग वर्णन में स्वाभाविक गहराई है जो आम आदमी के हृदय को छू जाता है। इनका वियोग चमत्कृत नहीं करता है।

4. भ्रमरगीत में मौलिक उद्भावनाएँ :- कृष्ण भक्त कवियों ने भ्रमरगीत परंपरा के द्वारा गोपियों के उद्धव के तर्क वितर्कों के माध्यम से सगुण की निर्गुण पर तथा भक्ति की ज्ञान पर विजय स्थापित की है। गोपियाँ जो कृष्ण के लोकरंजक रूप पर मोहित है वे निर्गुण ब्रह्म के उपासक उद्धव पर व्यंग्योक्ति करती है -

'निर्गुण कौन देस को बासी।

मधुकर हंसि समुझाय! सौंह दे बूझाति साँच न हाँसि।

को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारी को दासि।।'

5. युग जीवन की अनुपस्थिति **:-** कृष्ण भक्त कवि कृष्ण के श्रृंगार व वात्सल्य से पूर्ण लीलाधरी पक्षों का चित्रण करने में मग्न रहे। उनकी कविताएं स्वप्न की तरह सुहावनी तो है किंतु सामाजिक जीवन के प्रति गंभीरता का उनमें अभाव है। कुंभनदास कहते हैं**-**

'भक्तन को कहा सीकरी सों काम

आवत जान पन्हैया टूटी, बिसरी गयो हरिनाम' (पन्हैया**-**जूती**)**

6. नारी मुक्ति की कविताएं **:-** मध्यकाल के जड़ परिवेश में जब महिलाएँ घर से निकल भी नहीं सकती थी ऐसे में विवाहित गोपियां कृष्ण से, जो कि पर पुरुष है, प्रेम करती है। वे कृष्ण के साथ 'रास' रचाती है। यह पहली भक्ति परंपरा है जहाँ 'मीरा बाई' नामक महान भक्त कवयित्री है जिनके पदों में नारी मुक्ति के स्वर सुनाई देते हैं। जिनके प्रेम में मस्ती है, सामाजिक नियंत्रणों की बेबसी नहीं है।

'पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे।

मैं तो अपने नारायण की आपहि हो गई दासी रे।

लोग कहैं मीरा भई बाँवरी, न्यात कहैं कुलनासी रे।'

(समाप्त)